ए. पी. एस. एम. कॉलेज, बरौनी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

हिन्दी विभाग, स्नातक प्रथम वर्ष(प्रथम पत्र)सत्र-2020-2023,

डॉ. मेनका कुमारी

नाटक

- नाटक का संबंध लोक चेतना से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। नाटकों के संवाद और उसके मंचन के द्वारा सीधे जन मानस से जुड़ा जा सकता है। भारतेन्दु तथा उनके युग के सात्यिकारों ने जन चेतना के प्रचार-प्रसार के लिए नाटक को अत्यंत उपयोगी माध्यम माना। इसलिए इस युग में नाट्य-विधा का पर्याप्त विकास हुआ।

- आधुनिक नाटकों का उद्भव भारतेन्दु युग(1850-1900) से ही होता है। इससे पूर्व संस्कृत नाटकों की विरासत तो थी लेकिन उसका भी क्षय हो चुका था। संस्कृत नाट्य परंपरा भी खुद पतन की ओर उन्मुख थी। दसवीं शताब्दी के बाद के नाटक पूर्व के नाटकों के अनुकरण मात्र थे। मुरारि, राजशेखर, जयदेव, सोमेश्वर आदि के नाटक इसी श्रेणी के हैं।

- एक दूसरी परंपरा ब्रजभाषा के गीतिनाटक या काव्य-नाटकों की थी। ये नाटक भी संस्कृत के नाटकों की क्षयशील परंपरा के ही अवशेष हैं। इनमें प्राणचंद चौहान का 'रामायण नाटक', बनारसीदास का 'समय सार' रघुराज नागर का 'सभासार' और लछिराम का 'करुणाभरण' आदि हैं। ये सभी नाटक ब्रजभाषा में छंदोबद्ध नाटक हैं जिसका न तो नाटक की दृष्टि से महत्व है और न ही ब्रजभाषा-काव्य की दृष्टि से।

- ब्रजभाषा के नाटकों में ही रीवां नरेश विश्वनाथ सिहं का 'आनंद रघुनंदन' और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पिता गोपालचन्द्र गिरिधरदास का 'नहुष' को अलग से रेखांकित किया जा सकता है। यद्यपि कभी-कभी इन्हीं दोनों नाटकों को पहला नाटक मान लिया जाता है लेकिन आधुनिक दृष्टि से नाटकों की वास्तविक शुरुआत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही की है।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के पूर्व नाटकों के कई रूप प्रचलित थे। संस्कृत नाटकों की परंपरा के साथ रामलीला, स्वांग, नौटंकी आदि लोक-नाट्य रूप भी मौजूद था। बांग्ला भाषा में नाटकों की एक परंपरा विकसित हो गई थी। पारसी रंगमंच का भी एक रूप मौजूद था और पश्चिमी नाट्य शैलियां भी प्रचलित हो रही थीं। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इन सब नाट्य परंपराओं का सामंजस्य किया।

- भारतेन्दु युग में हो रही राष्ट्रीयता के विकास के कारण समय की मांग थी कि नाटकों के ढांचे में परिवर्तन हो। भारतेन्दु ने पूर्ण रूप से न प्राचीन नाट्य रूप को अपनाया और न पाश्चात्य नाट्यरीति को। दोनों का समन्वय करते हुए उन्होंने बांग्ला नाटकों का भी प्रभाव ग्रहण किया। अपनी जगन्नाथपुरी की यात्रा में वे बांग्ला नाटकों से परिचित हुए थे।
-

- भारतेन्दु के नाटक लिखने की शुरुआत बांग्ला के 'विद्यासुन्दर(1867) नाटक के अनुवाद से हुई। उनके अनूदित नाटक हैं-
- 1 रत्नावली 2 पाखंड-विडंबन 3 धनंजय विजय 4 मुद्राराक्षस 5 दुर्लभबंधु 6 कर्पूर मंजरी
- कर्पूर मंजरी प्राकृत से अनूनित है और दुर्लभबंधु अंग्रेजी से। अन्य नाटक संस्कृत से। 'विद्यासुन्दर' बांग्ला नाटक का छायानुवाद है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के मौलिक नाटक हैं-

- 1 वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति 2 प्रेमयोगिनी 3 विषस्य विषमौषधम 4 चन्द्रावली 5 भारत दूर्दशा 6 अंधेर नगरी 7 नीलदेवी 8 सतीप्रताप

- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति(1872ई.) एक प्रहसन है जिसमें धर्म के नाम पर अनेक तरह के कुकृत्यों का मजाक उड़ाया गया है। 'विषस्य विषमौषधम में देशी रजवाड़ों की दुष्प्रवृत्तियों का उद्घाटन किया गया है और इन रजवाड़ों के समर्थक अंग्रेजों को विष माना गया है। 'भारत दुर्दशा में भारत की दयनीय स्थिति का बहुत ही रोचक और यथार्थपरक ढंग से चित्रण किया गया है। 'अंधेर नगरी'(1881) में राजकीय अस्तव्यस्ता का जीवंत चित्र है जो दरअसल एक तीखा व्यंग्य है। 'नीलदेवी' में भारतीय नारियों के वीरत्व, पातिव्रत्य आदि गुणों को उभारा गया है। 'सती प्रताप' में सावित्री के माध्यम से एक उच्चादर्श की प्रतिष्ठा की गई है।

- विषय-वस्तु के साथ ही नाटक की संरचना या शिल्प विन्यास में भी भारतेन्दु ने आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाया है। नाटक नामक निबंध में उन्होंने जोर देकर कहा है-"अब नाटकों में कहीं आशीः प्रभृति नाट्यालंकार, कहीं प्रकरी, कहीं संफेट, कहीं पंचसन्धि वा ऐसे ही अन्य विषयों की कोई आवश्यकता नहीं रही। संस्कृत नाटक की भांति हिन्दी नाटक में इनका अनुसन्धान करना, वा किसी नाटकांग में इनको यत्नपूर्वक रखकर हिन्दी नाटक लिखना व्यर्थ है।"

- रंगमंच की दृष्टि से उनका सबसे महत्वपूण नाटक 'अंधेर नगरी' है। 'नौटंकी' शैली पर आधारित यह नाटक अपने क्रियात्मक शब्दों से व्यंग्यात्मक गीतों से ऐसा नाट्य बिंब प्रस्तुत करता है जो सामाजिक होते हुए भी समय को अतिक्रमित कर जाता है।

- भारतेन्दु युग के अन्य नाटककारों ने भी कई महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की है। प्रवृतियों के आधार पर इस युग के नाटकों को रोमैंटिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, राष्ट्रीय और व्यंग्यात्मक(प्रहसन) आदि में बांटा जा सकता है।

- रोमैंटिक नाटकों में लाला श्रीनिवासदास(1851-1897) का 'रणधीर प्रेम-मोहिनी'(1877), किशोरीलाल गोस्वामी का 'मयंक मंजरी' नाटक उल्लेखनीय है। इन नाटकों की मूल भावना चरित्र सुधार है। विषय और रचना की सृष्टि की दृष्टि से ये नाटक सर्वथा रोमैंटिक हैं। 'रणधीर प्रेम-मोहिनी' के प्रमुख पात्र अद्‌भुत साहसी और पराक्रमी हैं। अपनी प्रेमिकाओं को प्राप्त करने के लिए वे जिस साहस का परिचय देते हैं वे मध्यकालीन शौर्य की याद दिलाता है। इस नाटक में बीच-बीच में समसामयकि समस्याओं का भी समावेश कर लिया गया है।

- 'मयंक-मंजरी' का कथानक अपेक्षाकृत चुस्त तथा कार्य-कारण की श्रृंखला से सुसम्बद्ध है। इस नाटक की एक कमजोरी यह है कि इसमें कविताएं भरी पड़ी हैं जिससे नाटक के प्रवाह में बाधा पड़ती है।

- ऐतिहासिक रोमांस-प्रधान नाटकों में **राधाकृष्णदास** का **'महाराणा प्रतापसिंह '** उल्लेखनीय है। कुछ अन्य नाम भी इस श्रेणी में हैं लेकिन ये नाटक सिर्फ नाम के ऐतिहासिक हैं, जैसे- **लाला श्रीनिवासदास** का **'संयोगिता स्वयंवर'**, **काशीनाथ खत्री(1849-1891)** का **'सिंधुदेश की राजकुमारियाँ'** और **'गुन्नौर की रानी'**, **राधाकृष्णदास** का **'महारानी पद्मावती'** आदि।

- भारतेन्दु युग के प्रहसनों में व्यंग्य का पैनापन दिखाई पड़ता है। प्रहसन अपने उद्देश्यों में बहुत हद तक सफल रहे हैं। इन प्रहसनों के द्वारा नई प्रगति की विरोधी मनोवृत्तियों पर व्यंग्य किया गया है। घिसी पिटी रूढ़िग्रस्त मान्यताओं, अंधविश्वासों आदि को प्रहसनकारों ने अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाया है। **राधाचरणगोस्वामी(**1858-1925) और **खडगबहादुर मल्ल**(1853-1889) इस काल के प्रमुख प्रहसनकार हैं।

- **राधाचरण गोस्वामी** के प्रहसनों में 'तन मन धन की गोसाई जी को अर्पण', 'बड़े मुँह मुँहासे' प्रमुख हैं। 'तन मन धन की गोसाई जी को अर्पण में' धर्मगुरुओं के व्यभिचारों की पोल खोली गई है। 'बड़े मुंह मुंहासे' में परनारी गमन का दृष्परिणाम बताया गया और हिन्दू-मुस्लिम एकता की ओर भी संकेत किया गया है। **खड्गबहादुर मल्ल** के 'भारत आरत' प्रहसन में शासकों और ओहदेदारों की बुरी प्रवृत्तियों और प्रजा की दुर्बलताओं पर गहरा व्यंग्य किया गया है।

- **देवकीनंदन** के **'जयनार सिंह'** में ओझाई के विश्वासों पर व्यंग्य किया गया है। **गोपालराम गहमरी** के **'देश दशा'** में सरकारी धांधली को व्यंग्य का विषय बनाया गया है। **अम्बिकादत्त व्यास** की **'देशी घी और चर्बी'** में व्यावसाय में भ्रष्टाचार और कुरूपता का वर्णन है।

सामाजिक-पौराणिक

- सामाजिक नाटकों में जो विषय उठाए गए हैं वो तत्कालीन समाज की जरूरत के हिसाब से हैं। ये नाटक मुख्यतः सुधारवादी दृष्टिकोण से लिखे गए हैं। इन नाटकों में बालविवाह, पर्दाप्रथा का विरोध, विधवाविवाह, स्त्री शिक्षा आदि विषय उठाए गए हैं। इसमें **बालकृष्ण भट्ट** का नाटक **'जैसा काम वैसा परिणाम'** **राधाकृष्ण दास** का **'दुःखिनी बाला'** आदि प्रमुख हैं।

- इस प्रकार भारतेन्दु युग में स्वतंत्र रूप से नाटकों का उद्भव होता है। इस युग में लिखे गए सभी नाटकों में तत्कालीन सामाजिक समस्याओं से जुड़ने की गहरी ललक दिखाई पड़ती है। व्यंग्य विनोद के साथ तत्कालीन सामाजिक यथार्थ से जुड़ने की समझ और रंगमंच के विविध प्रयोगों और युक्तियों को आत्मसात करने की प्रवृत्ति इस युग के प्रायः सभी नाटककारों में पाई जाती है।